शिक्षकों को आपस में अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

चर्चा पत्र

माह- जनवरी, 2023
अष्ठम वर्ष अंक – 8

मूलभूत बुनियादी साक्षरता एवं गणितीय कौशल लाना

अपनी शाला के शत् प्रतिशत बच्चों पर विशेष ध्यान देकर मूलभूत साक्षरता एवं गणितीय कौशल में दक्ष बनाना हैं।

सावित्री सेन, प्राथमिक शाला देवरी, बिलासपुर

स्थानीय कामगारों की जानकारी देना

शाला के प्रत्येक बच्चे को स्थानीय कारीगरों की सहायता से जीवन उपयोगी वस्तु बनाने सिखाना

बलदाऊ सिंह श्याम, शा. प्रा. शाला तिलकडीह, कोटा

कम्प्यूटर का बेसिक ज्ञान

विद्यालय के समस्त बच्चों को कम्प्यूटर की बेसिक जानकारी में दक्ष बनाना हैं।

चरण दास महंत, शा. प्रा. शाला धनुहारपारा, मस्तूरी

बाल साहित्य उपलब्ध कराना

शाला के प्रत्येक बच्चे में पढ़ने की रुचि बढ़ाने के लिए स्थानीय स्तर पर बाल साहित्य का निमार्ण कराना

श्रीमती सुधा शर्मा, शा. प्रा. शाला मुंगेली

स्थानीय भाषा में मूलभूत बुनियादी साक्षरता

शाला के प्रत्येक बच्चे को हिंदी व अंग्रेजी भाषा की मूलभूत बुनियादी साक्षरता के लक्ष्य को प्राप्त करना

श्रीमती आशा कुरैशी, शा. प्रा. शाला बालिकोंटा, बस्तर

राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़

एजेंडा एक:- मध्यप्रदेश की टीम के साथ शैक्षिक भ्रमण के अनुभव

छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश में स्कूली शिक्षा में चल रहे विभिन्न कार्यक्रमों के अवलोकन एवं एक दूसरे से सीखने का एक अवसर दोनों राज्यों को प्राप्त हुआ। छत्तीसगढ़ से एक दल मध्यप्रदेश के बडवानी जिला एवं भोपाल में राज्य स्तरीय बैठक हेतु दिनांक 23.09.22 से 27.09.22 तक मध्यप्रदेश राज्य के भ्रमण में रहा। इसके बाद मध्यप्रदेश की टीम द्वारा छत्तीसगढ़ के धमतरी, कांकेर, बस्तर के शालाओं का भ्रमण दिनांक 11.12.22 से 14.12.22 तक करते हुए रायपुर में राज्य स्तरीय बैठक में अपने अनुभव साझा किए गए। इस भ्रमण के दौरान निम्नलिखित अनुभव प्राप्त हुए जिन पर आगे कार्य करना है-

- राज्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में उल्लेखित प्रावधान अनुसार प्रथम चरण में ऐसे प्राथमिक शालाओं में बालवाडी खोले गए हैं जहां उसी कैम्पस में आंगनबाडी है। यहाँ प्राथमिक शिक्षक अपने लिए निर्धारित कक्षाओं के साथ-साथ प्रतिदिन दो घंटे बालवाडी में बच्चों के लिए समय दे रहे हैं। बालवाडी, आंगनबाडी एवं प्राथमिक शाला के छोटे-छोटे बच्चे कई बार एक साथ बैठकर सीखने का आनन्द लेते हैं। शिक्षकों के पास स्थानीय भाषा में अध्यापन हेतु कुछ सामग्री उपलब्ध है। बच्चों के कार्यों को संकलित रखने हेतु प्रत्येक बच्चे के लिए एक पोर्टफोलियो के रूप में दीवार में बस्ता लटकाया गया है। प्रतिदिन करवाए गए कार्यों को शिक्षक इसमें संबंधित बच्चे के पोर्टफोलियो में रखते हैं।
- स्वामी आत्मानंद स्कूलों में बहुत सक्रिय शिक्षक पदस्थ किए गए हैं। उनमें असीम ऊर्जा दिखाई दे रही है। इन शिक्षकों के सतत क्षमता विकास की आवश्यकता है। स्मार्ट कक्षाओं के लिए उपयोग में लाए जा रहे बोर्ड का बेहतर उपयोग एवं रख-रखाव पर ध्यान देना होगा। प्रयोगशालाओं में पदस्थ सहायकों के क्षमता विकास की आवश्यकता है।
- प्राथमिक शालाओं में स्थानीय भाषा में सिखाने हेतु प्रावधान किए गए हैं। स्थानीय स्तर पर समुदाय के साथ बच्चों के लिए सामग्री बनाए जाने हेतु कहानी उत्सव का आयोजन किया जा रहा है जिसमें समुदाय बहुत सक्रिय होकर शामिल हो रहा है। इसे सभी स्थानों में करते हुए समुदाय से सहयोग लिया जा सकता है। प्रिंट-रिच वातावरण का बेहतर उपयोग हो रहा है। बच्चों को वोकल बनाने हेतु साउंड सिस्टम देते हुए प्रार्थना के दौरान बोलने का अवसर दिया जाता है ताकि स्थानीय भाषा में बोलने का अवसर देकर उनके संकोच को दूर किया जा सके।
- डाईट में बच्चों के स्थानीय भाषा में सीखने हेतु बेहतर व्यवस्थाएं उपलब्ध हैं। जिला स्तर पर बहुत सारी सामग्री विकसित की जा रही है। डाईट एवं विभिन्न गैर-शासकीय संस्थाओं के मध्य बेहतर समन्वय दिखाई दे रहा है। इसका लाभ स्कूलों को मिल सकेगा। डाईट में स्थानीय भाषा में कार्य करने हेतु एक प्रकोष्ठ विकसित कर कार्य किए जाने की आवश्यकता है। शिक्षकों को बच्चों की भाषा में संवाद हेतु आपस में मिलकर एक दूसरे से सीखने के अवसर मिलने चाहिए।
- राज्य में चल रहे चर्चा पत्र एक अच्छा प्रयोग है जिसका लाभ शिक्षकों को मिल रहा है।
- छोटी कक्षाओं में अध्यापन के दौरान शिक्षकों को कक्षा के भीतर जोते-चप्पल पहनकर नहीं जाना चाहिए। उसी प्रकार से निरीक्षण दल को भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए।

एजेंडा दो:- बच्चों के द्वारा लिखित सामग्री को कक्षा प्रक्रिया में इस्तेमाल करना

- अपने विचारों को व्यक्त करना, दूसरों तक संप्रेषित करना एवं दूसरों के विचारों से अवगत होना निश्चय ही मनुष्य की आवश्यकता रही है और इस आवश्यकता को पूरा करने में भाषा अपनी भूमिका निभाती रही है। बच्चे जब पहली बार स्कूल आते हैं तो वे खाली हाथ नहीं आते हैं बल्कि अपने साथ अपने घर की भाषा भी लाते हैं। स्कूल आने से पूर्व बच्चे अपने परिवेश की भाषा में पारंगत हो चुके होते हैं किन्तु स्कूल में उनका सामना भाषा के एक और स्वरुप से होता है - भाषा के लिखित स्वरुप से। भाषा के मौखिक स्वरुप को तो बच्चे बड़ी सहजता से आत्मसात कर लेते हैं, किन्तु भाषा के लिखित स्वरुप को सजगता के साथ सीखना पड़ता है; क्योंकि इसमें ध्वनियों के बजाय उनके प्रतीक चिन्हों से उनका सामना होता है।। इन प्रतीक चिन्हों को वर्ण कहते हैं अतः पढ़ना-लिखना सीखने के लिए वर्णों की पहचान, वर्णों का ध्वनियों से संबंध, इनकी बनावट, इन्हें लिखने का तरीका एवं इन्हें जोड़कर शब्द बनाना आदि कुशलता सीखना आवश्यक है। ध्वनियों को अलग से पहचान कर ही तो ध्वनि और वर्ण का सम्बन्ध सीखा जा सकता है तो इस तरह पढ़ना-लिखना सीखने में मौखिक भाषा ननिश्चित रूप से आधारभूमि का कार्य करती है।

- लेखन के मुख्यतः दो आयाम होते हैं- पहला कौशल आधारित लेखन तथा दूसरा रचनात्मक लेखन। कौशल आधारित लेखन में वर्णों की पहचान, वर्णों का ध्वनियों से संबंध, इनकी बनावट, इन्हें लिखने का तरीका एवं इन्हें जोड़कर शब्द बनाना आदि कुशलता शामिल है जबकि रचनात्मक लेखन के अंतर्गत विषय वस्तु के बारे में सोचना, तर्क करना, विश्लेषण करना, अपने अनुभवों या विचारों को सुव्यवस्थित रूप से लिखना, लेखन को संप्रेषणीय बनाने के लिए उनमें आवश्यक संशोधन करना आदि शामिल होते हैं।

- लिखना एक संवाद है-स्वयं से या पाठकों से। जब हम मौखिक संवाद करते हैं तो विचार, कल्पना एवं सोच हमारी अपनी होती है। ज़ाहिर है की मौलिकता एवं रचनात्मकता लेखन की आत्मा है परंतु जब कक्षा-कक्ष में बच्चों को वर्णमाला को बार-बार लिखने के लिए कहा जाता है, या पुस्तक के किसी अंश को नकल करने के लिए कहा जाता है तो ये कवायद उन्हें अर्थहीन और उबाऊ लगती है। यह बच्चों को थकाने वाली है। इस प्रक्रिया में धीरे-धीरे उनकी मौलिकता दम तोड़ देती है। अक्सर यह देखा गया है कि बच्चे लिखने-पढ़ने कि प्रक्रिया को केवल पाठ्यक्रम से ही जोड़ लेते है और इनसे किसी प्रकार का सार्थक रिश्ता नहीं बना पाते इसलिए यह बेहद ज़रूरी हो जाता है कि बच्चों को कक्षा के अंदर मौके देकर उनमें यह विश्वास जगाना कि वे बिना किसी झिझक के अपनी कल्पनाएँ, अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी के अनुभव लिखकर बता सकें। इसमें कोई दो राय नहीं कि लिखना सीखने के लिए सभी वर्णों की पहचान एवं वर्णों की ध्वनि को जानना ज़रूरी है लेकिन यह प्रक्रिया इतना बोझिल व यांत्रिक न हो कि रचनात्मकता और मौलिकता कहीं खो जाय। आपने गौर किया होगा कि बच्चे जब बोलना सीख रहे होते हैं तो वयस्क उनकी गलतियों के बजाय अर्थ पर ध्यान देते हैं और इस तरह

मौखिक भाषा में उनकी मौलिकता जीवित रहती है। क्या लिखना सीखाने की प्रक्रिया ऐसी हो सकती है ? यदि बच्चों को पूरी आज़ादी मिले कि वे जो भी सोचते या चाहते हैं लिख सकते हैं तो वे निश्चय ही अपने मन की बात लिखेंगे। यदि उनके द्वारा लिखित सामाग्री को कक्षा की दीवारों में स्थान मिले, उस पर कक्षा में चर्चा हो एवं उनकी सराहना हो तो बच्चों को महसूस होता है कि उसने जो लिखा है वह महत्व का है । वे और बेहतर लिखने के लिए प्रेरित होते हैं। इस प्रक्रिया में उनके लेखन में त्रुटियाँ भी कम होने लगती है यदि उन पर सकारात्मक ढंग से बात की जाय। बच्चों के द्वारा लिखित सामाग्री को कैसे कक्षागत प्रक्रिया में शामिल करें जिससे लेखन के साथ-साथ अन्य भाषाई कौशलों का विकास हो? इस माह के चर्चा पत्र में हिन्दी शिक्षण के अंतर्गत इस माह चिन्हांकित पाठों की पाठ योजना में इसी के नमूने दिए गए हैं।

❖ इस माह प्रत्येक कक्षा के जिन पाठों पर कार्य किया जाना है वे इस प्रकार हैं -

क्रमांक	कक्षा	इस माह में कार्य किए जाने वाले पाठों के नाम
1.	पहली	बंदर और गिलहरी , हलीम चला चाँद पर
2.	दूसरी	चित्रकोट जल प्रपात , क्या है उसका नाम ?
3.	तीसरी	अब बतलाओ , मैत्री बाग , क्या तुम मेरी अम्मा हो?
4.	चौथी	बगरे हे चंदा अंजोर , किताबें, डॉ जगदीश चंद्र बोस
5.	पाँचवीं	सुनता के डोर , महापुरुषों का बचपन , गुरु और चेला
6.	छठवीं	हार की जीत , हाना
7.	सातवीं	सुब्रमण्यम भारती , राजीव गांधी
8.	आठवीं	सिखावन , हिरोशिमा की पीड़ा

कक्षा 1 कक्षा 2 कक्षा 3

कक्षा 4 कक्षा 5 कक्षा 6

कक्षा 7 कक्षा 8

एजेंडा तीन: सीखने के नुकसान की भरपाई के लिए गणित विषय पर कक्षा में कार्य

- इस माह कई संकुलों में संकुल बैठक अकादमिक रूप से आयोजित हुई, जिसमें संकुल समन्वयकों ने अपने संकुल के मेंटर/मास्टर ट्रेनर की टीम के माध्यम से निम्न बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा की- 1. शिक्षकों के मध्य, बच्चों को कक्षा स्तर तक लाने के लिए पाठवार पढ़ाने के तरीके का साझाकरण। 2. बच्चों को पाठ सीखने के दौरान आ रही कठिनाइयों पर चर्चा। 3.शिक्षकों द्वारा उन कठिनाइयों को दूर करने के लिए अपनाए गए कारगर तरीके। 4. दिसंबर माह में पढ़ाये जाने वाले प्रत्येक पाठ की योजना का निर्माण करना।
- यह प्रक्रिया अभी भी सभी संकुलों में नहीं हो पा रही है तो पूर्व की भांति इस माह सभी संकुल बैठकों में प्रत्येक कक्षा में बुनियादी गणितीय कौशल को सुनिश्चित करते हुए और सीखने में हुये नुकसान को दूर करने का प्रयास जारी रखने होंगे। इस संदर्भ में सभी संकुल समन्वयकों और संकुल प्राचार्यों से अपेक्षित है कि वे संकुल बैठक को अकादमिक रूप से आयोजित करते हुए निम्न बिन्दुओं पर ध्यान दें- माह जनवरी के निर्धारित पाठ्यक्रम पर आधारित विभिन्न पाठों की पाठ योजना का लिंक दिया जा रहा है, जिसमें क्लिक करने से सम्बंधित पाठ योजनाओं में उस पाठ के सीखने के प्रतिफल, पूर्व ज्ञान के आधार पर बच्चों के स्तर की पहचान हेतु प्रश्न तथा इकाई /समेकित आकलन हेतु प्रश्न दिये गए हैं। संकुल अकादमिक चर्चा के दौरान सभी शिक्षकों में यह समझ बनाना सुनिश्चित करें कि -

1. कक्षावार संबन्धित सीखने के प्रतिफल कौन-कौन से हैं।

2. उनको प्राप्त करने के लिए पाठ योजना कैसी हो?

3. संकुल की जरूरत के अनुसार शिक्षक साथी प्रत्येक कक्षा के लिए जनवरी माह में दिए पाठ के अनुसार कम से कम एक-एक पाठ योजना ज़रूर बनाएँ।

4. संकुल समन्वयक अपने अकादमिक निरीक्षण में पाठ योजना के कक्षा में निष्णादन का अवलोकन ज़रूर देखें

जैसे - **1.** कक्षागत प्रक्रिया में सहायक सामग्री, कार्य पुस्तिका तथा पाठ्य पुस्तक में दिये गए अभ्यासों पर सघन रूप से कार्य करते हुये, शिक्षक अपने बच्चों के स्तर सुधार के प्रयासों में और तेजी कैसे लाएँ।

2. इकाई अथवा समेकित आकलन के लेखा-जोखा के आधार पर उपचारात्मक शिक्षण पर विशेष ध्यान कैसे दे रहे हैं।

3. इकाई/समेकित आकलन से प्राप्त परिणामों के आधार पर विद्यार्थी सूचकांक में बच्चे के उन्नति को सीधे शब्दों में दर्ज करना होगा ताकि उसकी प्रगति को देखते हुये अगले दिन या अगली कड़ी में किए जाने वाले कार्य को निर्धारित कर सकें।

4. पूर्व में सिखाये गए पाठों के जिन बिन्दुओं में अपेक्षित सफलता नहीं मिली है उन्हें शिक्षक अपने शिक्षण में उचित बदलाव के साथ अवश्य शामिल करें।

कक्षावार सुझावात्मक पाठ योजना को नीचे दिए गए लिंक में क्लिक करके पढ़िए -

कक्षा 1 : समय | कक्षा 2 : ज्यामितीय आकृतियाँ | कक्षा 3 : आंकड़ों का निरूपण

कक्षा 4 : चीजें कैसी दिखती हैं | कक्षा 5 : आंकड़ों का निरूपण | कक्षा 6 : परिमाप

कक्षा 7 : सांख्यिकी | कक्षा 8 : परिमेय संख्याओं पर संक्रियाएँ

- उपरोक्त पाठ योजनाएँ उदाहरण स्वरूप दी गई हैं। शिक्षक साथी इसमें अपनी कक्षा के बच्चों के सीखने की गति, रुचि एवं जरूरत के अनुरूप परिवर्तन करने के लिए स्वतंत्र हैं किन्तु पाठ योजनाओं को बनाते एवं उनका क्रियान्वयन करवाते समय निम्न बातों का ध्यान रखें:
- प्रतिदिन हर बच्चा किसी न किसी गतिविधि में सहभागी हो।
- बच्चे के सीखने का स्तर ध्यान में रखते हुये उसे गतिविधि करने का अवसर दिया जाये जो उसके स्तर को सुधारने में सहायक होगी।
- जितना संभव हो सके प्रत्येक बच्चे पर व्यक्तिगत रूप से उसके स्तर को देखते हुये ध्यान दिया जाए।

एजेंडा चार: FLN-MENTOR प्रशिक्षण के आउटकम

राज्य में इस वर्ष डिजाइन किए गए FLN प्रशिक्षण में ये प्रक्रिया अपनाई गई हैं-

- प्रथम चरण: संभाग स्तर पर विकासखंड से दो-दो मेंटर्स का चार दिवसीय प्रशिक्षण
- द्वितीय चरण: विकासखंड स्तर पर संकुल के दो-दो मेंटर्स का चार दिवसीय प्रशिक्षण
- तृतीय चरण: संकुल स्तर पर प्राथमिक स्कूल के शिक्षकों का चार दिवसीय प्रशिक्षण

वर्तमान में लगभग पंचास से अधिक विकासखंडों में यह प्रशिक्षण आयोजित हो चुका है और शेष में इसकी तैयारी चल रही है। इसके बाद अगले चरण में संकुल में यह प्रशिक्षण आयोजित होना है।

संकुल में प्रशिक्षण के दौरान आप इन प्रक्रियाओं को अपना सकते हैं-

- जिले को दिए गए लक्ष्य को सभी संकुलों में बांटते हुए प्रत्येक शाला से इस प्रशिक्षण में सहभागिता
- उपरोक्तानुसार संकुलों को एक लक्ष्य देकर उन्हें प्रति शिक्षक के मान से व्यय हेतु बजट जारी करना
- संकुल स्तर पर शाला को कम से कम प्रभावित करते हुए शिक्षकों का क्षमता विकास करना

शाला को कम से कम प्रभावित करने हेतु निम्नलिखित में से सर्वमान्य रणनीति अपनाई जा सकती हैं-

- चार दिवसीय प्रशिक्षण अवकाश के दिनों में करते हुए लक्ष्य को पूर्ण गुणवत्ता के साथ प्राप्त करना
- संकुल स्तरीय मासिक बैठकों को पन्द्रह दिनों के भीतर कुछ-कुछ घंटों का रखते हुए सभी निर्धारित बिन्दुओं पर चर्चा कर सीखना

- विभिन्न मुद्दों पर स्व-अध्ययन का अवसर देते हुए चार दिवसीय कोर्स को ब्लेंडेड मोड़ में कुछ आनलाइन एवं कुछ आफलाइन करते हुए सभी मुद्दों को पूर्ण गुणवत्ता के साथ कव्हर करना
- स्कूलों में शिक्षकों के लिए मुद्रित कर वितरित सभी पठन सामग्री को पढ़ने का अवसर देते हुए उस पर आधारित प्रश्न तैयार कर आनलाइन क्विज आदि के माध्यम से सभी का पढ़ना सुनिश्चित करना

संकुलों में इस प्रशिक्षण के उपरान्त निम्नलिखित आउटकम दिखाई देने चाहिए-

- सभी संकुलों में दो-दो प्रशिक्षित मेंटर के माध्यम से FLN के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु लीडरशिप
- प्रत्येक संकुल में भाषा और गणित के लिए मेंटर और मेंटी का चिह्नांकन कर जवाबदेही देना
- मेंटर और मेंटी मिलकर अपने क्षेत्र के सभी बच्चों में गुणवत्ता सुधार हेतु स्वपहल कर कार्य
- स्थानीय स्तर पर विभिन्न विशेषज्ञों, सेवानिवृत्त व्यक्तियों, युवाओं को शामिल कर एक स्रोत पूल बनाकर FLN के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए समेकित प्रयास
- मेंटर और मेंटी की पूरी टीम को Think Globally Act Locally की तर्ज पर ऊपर से निर्देशों का इंतजार किए बिना लक्ष्य को ध्यान में रखकर कार्य करने की संस्कृति विकसित करना

कक्षाओं में इस प्रशिक्षण के उपरान्त निम्नलिखित आउटकम दिखाई देने चाहिए-

- सभी कक्षाओं में भाषा एवं गणित के लर्निंग आउटकम पोस्टर के रूप में प्रदर्शित होने चाहिए
- प्रत्येक कक्षा में प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा FLN के लक्ष्यों को ध्यान में रखकर सीखने में सहयोग हेतु रणनीतियां एवं गतिविधियाँ डिजाइन करनी चाहिए
- छोटे बच्चों को शुरुआती कक्षाओं में सीखने में सहयोग हेतु भरपूर और रोचक स्थानीय सामग्री तैयार कर उपयोग में लाया जाना चाहिए
- प्रत्येक बच्चे की नियमित उपस्थिति, सीखने के स्तर एवं शैली को ध्यान में रखते हुए अपने कक्षाओं में सीखने-सिखाने को प्रभावी बनाना
- बच्चों को छोटे-छोटे समूहों में एक दूसरे से सीखने हेतु तैयार करना और कक्षा में टॉय-पेडागोजी का उपयोग कर कक्षा शिक्षण को प्रभावी बनाना

संकुल स्तर पर इन प्रशिक्षणों के आयोजन के बाद कक्षाओं में इनमें सुझाए गए तरीकों एवं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए निरंतर प्रयास एवं मानिटरिंग व्यवस्था में कसावट लाएं। मेंटर-मेंटी के इस प्रशिक्षण के उपरान्त प्रत्येक बच्चे में FLN के लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में अनिवार्यतः बहुत नजदीक पहुंच जाना चाहिए। स्थानीय स्तर पर इस प्रशिक्षण को रोचक एवं प्रभावी बनाए जाने कुछ नवाचार अवश्य जोड़ें।

छत्तीसगढ़ में इस प्रशिक्षण के बाद किसी भी प्राथमिक शिक्षक से पूछा जाए तो उन्हें भाषा एवं गणित में अपने मेंटर का नाम मालूम होना चाहिए। अब आगे राज्य से निर्देशों का इन्तजार करने के बदले मेंटर और मेंटी मिलकर अपने अपने क्षेत्र में प्रत्येक बच्चे को अच्छे से पढ़ना, लिखना और गणित में दक्ष कर सकेंगे। राज्य में अब FLN के लक्ष्यों पर पूरा फोकस, कार्ययोजना एवं आगे नियमित गतिविधियों का आयोजन इन मेंटर और मेंटी को ही करना है। कृपया सक्रिय हो जाएं !

एजेंडा पांच: स्कूल कोम्प्लेक्स के परिप्रेक्ष्य में सीएसी की बदली हुई भूमिका

संकुल समन्वयकों को अपने संकुल के अन्य शिक्षकों के लिए मेंटर की भूमिका निभानी होगी अर्थात वे उन्हें आवश्यकतानुसार कोच करने के साथ-साथ बेहतर कक्षा-अध्यापन हेतु आवश्यक मार्गदर्शन भी देते रहेंगे। संकुल समन्वयकों को अपने कार्य-व्यवहार में निम्नलिखित बदलाव लाए जाने होंगे-

1. संकुलों की संख्या पूर्व से दुगुनी होने की स्थिति में सभी संकुल समन्वयकों को अपनी शाला में अध्यापन के साथ-साथ ही समन्वयक की जिम्मेदारी लेनी होगी।
2. संकुल समन्वयक अंब केवल निर्देश देकर कार्य करवाए जाने की जिम्मेदारी को बदलकर सबसे पहले स्वयं अपनी शाला में बेहतर कार्य करते हुए उन्हें अपने आसपास की अन्य शालाओं के लिए स्वयं को एक आदर्श रूप में प्रस्तुत की जा सकेगी। उन्हें अन्य शालाओं के लिए प्रेरक बनकर दिखाना होगा।
3. संकुल समन्वयकों का कार्य प्रशासनिक से हटाते हुए पूर्णतः अकादमिक की ओर ले जाना होगा।
4. संकुल के प्रत्येक शिक्षक को संकुल की बैठकों के इस प्रकार से आमंत्रित किया जाए कि शालाएं कम से कम प्रभावित हो। इन बैठकों को आनलाइन स्वरूप में परिवर्तित कर ब्लेंडेड माध्यम का उपयोग किया जाए। एक एक एजेंडा को समझाने एवं चर्चा हेतु एक एक शिक्षक का चयन कर उन्हें तैयारी कर प्रस्तुतीकरण के लिए जिम्मेदारी देवें ताकि सभी का सक्रिय सहयोग इन बैठकों के दौरान लिया जा सके।
5. अलग अलग माह में संकुल स्तरीय बैठक का आयोजन करने की जिम्मेदारी अलग अलग शालाओं को देते हुए शिक्षकों को उन शालाओं का अवलोकन कर अपनी प्रतिक्रिया देवे एवं बेस्ट अभ्यासों को साझा किए जाने का अवसर देवें।
6. संकुल समन्वयकों को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि कौन सी शालाएं बेहतर प्रदर्शन कर रही हैं और किन शालाओं में किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है।
7. शालाओं में प्रदत्त संसाधन का उपयोग प्रत्येक बच्चे के विकास के लिए हो सके, इस बात पर विशेष ध्यान देना होगा। सीखने के लिए आसपास उपलब्ध अधिकतम संसाधनों का उपयोग करना होगा।
8. संकुल समन्वयक अपने शालाओं के प्रधानाध्यापकों के माध्यम से शिक्षकों का अधिकतम समय कक्षा अध्यापन में ही लगाया जाना सुनिश्चित करते हुए अधिक से अधिक समय Time on task के लिए लगाते हुए बच्चों के अधिगम स्तर में सुधार के लिए सतत प्रयत्नशील रहेंगे।
9. प्रत्येक कक्षा में प्रत्येक विषय के लिए लर्निंग आउटकम का प्रदर्शन कर उनके आधार पर ही शिक्षण का कार्य करना होगा। शाला के आसपास प्रिंट-रिच वातावरण बनाकर प्रदर्शित करना होगा।
10. प्रत्येक शाला में प्रतिदिन प्रधान अध्यापक के साथ सभी शिक्षक बैठकर पाँच मिनट के लिए अपने कक्षा अध्यापन की समीक्षा करने की परंपरा प्रारंभ की जाए। इसमें मुख्य रूप से मैं अपनी कक्षा में -------- Learning Outcome पर काम कर रहा हूँ और मुझे ..... पढ़ाने में कुछ समस्या आ रही है। आपसे ..... क्षेत्र में सहयोग की अपेक्षा है। ..... बच्चे पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है, इस प्रकार से सभी शिक्षकों को आपस में बैठकर चर्चा कर टीम भावना से काम किया जाना होगा।

एजेंडा छह: शाला संकुल प्राचार्यों के माध्यम से निरीक्षण हेतु टिप्स

शाला संकुल के भीतर सीमित संख्या में स्कूल एवं शाला संकुल का दायरा भी बहुत सीमित होने की वजह से यह अपेक्षा की जाती है कि शाला संकुल व्यवस्था के माध्यम से अकादमिक निरीक्षण का कार्य बहुत अच्छे और व्यवस्थित तरीके से हो सकेगा। एक शाला संकुल के भीतर औसत रूप से पांच से नौ तक की संख्या में स्कूल होते हैं। इन स्कूलों के निरीक्षण के लिए पूर्व से ही जिला एवं विकासखंड स्तर से विभिन्न अधिकारियों के साथ-साथ अब इस नई व्यवस्था में शाला संकुल प्राचार्य, उनकी शाला के विषय शिक्षक, संकुल स्रोत समन्वयक एवं शाला प्रबन्धन समिति के सदस्य भी जुड़ रहे हैं। कोरोना के बाद स्कूली शिक्षा में टेक्नोलोजी का भी व्यापक स्तर पर उपयोग होने लगा है। एक संकुल प्राचार्य के नाते आप मॉनीटरिंग एवं निरीक्षण के लिए नीचे दी हुई कुछ युक्तियों को अपना सकते हैं –

i. वर्चुअल निरीक्षण- वीडियो काल के माध्यम से आप सीधे स्कूल से जुड़कर परिसर का अवलोकन, कक्षाओं का अवलोकन, सीखने-सिखाने की गतिविधियों का अवलोकन, बच्चों एवं शिक्षकों के साथ संवाद एवं शाला प्रबन्धन समिति से भी बातचीत कर सकते हैं।

ii. मासिक बैठक (आनलाइन/ आफलाइन)- संकुल स्तर पर आयोजित होने वाले मासिक बैठकों को आप दोनों **mode** में लेकर विभिन्न मुद्दों पर आसानी से एक ही जगह में बैठकर सभी शालाओं की समीक्षा कर सकते हैं।

iii. विद्यार्थी विकास सूचकांक- यदि आप प्रत्येक कक्षा में शिक्षकों को विद्यार्थी विकास सूचकांक प्रदर्शित करने के निर्देश देते हुए उसका पालन करवाते हैं तो यह एक बहुत ही आसान टूल होता है कक्षा में बच्चों की स्थिति की जानकारी लेने का

iv. गूगल फार्म- यह एक आसान टूल है जिसके माध्यम से हम विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से विभिन्न जानकारियों को कई स्रोतों से एक बार में ही भेजकर प्राप्त कर सकते हैं। प्राप्त जानकारियों को एक साथ संकलित करना एवं विश्लेषण करना आसान होता है।

v. **APP** के माध्यम से प्रविष्टि- अभी हम विशेष कोचिंग कक्षाओं के निरीक्षण के लिए एक एप्प बनाकर उसे गूगल प्ले स्टोर में डाला हुआ है। इस एप्प में इन कोचिंग कक्षाओं में जाकर निरीक्षण करते हुए कुछ जानकारियों के साथ-साथ कोचिंग का लाभ ले रहे बच्चों के फोटोग्राफ भी भेजे जा सकते हैं

vi. स्कूल पेयरिंग या ट्विनिंग ऑफ़ स्कूल- ट्विनिंग ऑफ़ स्कूल कार्यक्रम के अंतर्गत दो स्कूलों को एक दूसरे से जोड़ी बना दी जाती है। ये दोनों स्कूल आपस में जोड़ी बनाकर एक दूसरे का सहयोग करते हैं और एक दूसरे के स्कूलों में सुधार हेतु आवश्यक सुझाव भी देते हुए आगे बढाते हैं

vii. शाला अवलोकन (पारंपरिक निरीक्षण)- शालाओं का परंपरागत निरीक्षण हेतु किसी शाला में पूर्व से सूचित कर या बिना सूचित किए अचानक पहुंच कर किया जाता है। शाला में विभिन्न दस्तावेजों एवं योजनाओं के क्रियान्वयन की स्थिति के साथ-साथ बच्चों की उपलब्धि का आकलन कर शाला के शिक्षकों एवं प्रधानपाठकों को अपनी राय से अवगत करवाया जाता है।

viii. टेलीग्राम ग्रुप में चर्चा एवं सर्वे-संकुल के सभी शिक्षकों का एक टेलीग्राम ग्रुप बनाकर उसमें सभी को सक्रिय रखते हुए उस ग्रूप के माध्यम से विभिन्न शिक्षकों एवं शालाओं द्वारा किये जा रहे विभिन्न कार्यों की जानकारी ली जा सकती है।

ix. सामाजिक अंकेक्षण- शाला संकुल के सभी स्कूलों में गठित शाला प्रबंन्धन समिति के माध्यम से समय समय पर स्कूल का सामाजिक अंकेक्षण किया जा सकता है।

x. मासिक चर्चा पत्र- आप संकुल के सभी शिक्षकों को अपने अपने मोबाइल में **cgschool.in** से चर्चा पत्र को डाउनलोड कर उसका अध्ययन करने हेतु निर्देशित करें। इसका पोडकास्ट सुनने एवं चर्चा पत्र टीवी में वीडियो भेजने कहें।

एजेंडा सात: सुघ्घर पढ़वईया में निरीक्षण हेतु तैयारी

सुघ्घर पढ़वईया कार्यक्रम में इस माह के अंत तक लगभग आधे स्कूल अपना पंजीयन कर लेंगे। अभी भी स्कूलों को इस योजना से जुड़ने में एक गलतफहमी है। उन्हें यह लगता है कि कार्यक्रम में जुड़ते ही शाला का निरीक्षण करने दल आ जाएगा - ऐसा नही है। आप कार्यक्रम से जुड़कर समझ बनाकर किन किन मुद्दों पर तैयारी करनी है और किन किन क्षेत्रों में आपको स्वयं का क्षमता विकास करना है, सभी बातों को ध्यान में रखकर जब पूरी तरह से संतुष्टि हो जाए, तभी इस योजना के अंतर्गत पोर्टल में जाकर निरीक्षण टीम को आमंत्रित करना है। तब तक आप अपनी तैयारी करते रह सकते हैं। यदि आपको आगे जाना है, बच्चों को अच्छी शिक्षा देनी है तो आपको प्लेटफोर्म में बैठकर ट्रेन को देखना नहीं है बल्कि उसमें टिकट लेकर सवार होना है। वे सभी शिक्षक जो अपने स्कूल की तरक्की देखना चाहते हैं, अपने स्कूल में आपके भरोसे में पढ़ने वाले बच्चों को अच्छी शिक्षा देने हेतु आप सब एक टीम के रूप में अपने स्कूल को इसमें पंजीयन अवश्य करवाएँगे और मेहनत करेंगे। इस योजना में आपको अब निम्नलिखित तैयारी करनी होगी-

- सबसे पहले अपने स्कूल में सभी शिक्षकों, शाला प्रबन्धन समिति, शाला संकुल प्राचार्य एवं बच्चों के साथ चर्चा कर एकमत होकर इस योजना में अपना पंजीयन **cgschool.in** पोर्टल में जाकर करें
- पोर्टल में आपको कक्षा एक से आठ तक विभिन्न विषयों के लिए लर्निंग आउटकम मिलेंगे। इन लर्निंग आउटकम को डाउनलोड करते हुए सभी शिक्षकों को उनसे संबंधित सामग्री उपलब्ध करवाएं
- एक टीम के रूप में सबसे पहले शाला के प्रत्येक बच्चे को नियमित समय पर कक्षा में उपस्थित होने हेतु प्रेरित करें। नियमित उपस्थिति हेतु जिम्मेडारी विद्यार्थियों के सक्रिय दल को देवें। उपस्थिति में सुधार हेतु स्थानीय स्तर पर विभिन्न नवाचार कर उसका प्रभाव देखें। उपस्थिति 98% रहना चाहिए
- शाला में ऐसे कौन कौन से बच्चे हैं जो लंबे समय के लिए पलायन कर गए हैं, उनकी सूची बनाकर सरपंच से प्रमाणित कर उनके नाम अस्थाई रूप से विलोपित किए जा सकेंगे
- ऐसे विद्यार्थी जो विशिष्ट आवश्यकता की पृष्ठभूमि से हैं और विशेषकर लर्निंग डिसेबिलिटी से प्रभावित हैं उनकी सूची भी बनाकर ऐसे बच्चों को पोर्टल में चिह्नांकित किया जाएगा
- समग्र शिक्षा की ओर से शाला से बाहर एवं विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा का कार्य देख रहे प्रकोष्ठ ऐसे बच्चों की बेहतर शिक्षा हेतु विशेष प्रावधान एवं योजना सामने लाएंगे
- लर्निंग आउटकम का अध्ययन कर प्रत्येक लर्निंग आउटकम की सभी बच्चों में प्राप्ति के लिए विशेष गतिविधियों को डिजाइन करें। ऐसे कार्यों के लिए पीएलसी को सामने आना होगा और शिक्षकों के कक्षा शिक्षण में सुधार हेतु गतिविधियों को डिजाइन क्र उससे संबंधित सामग्री साझा करनी होगी
- आपको आवश्यक दक्षता के क्षेत्रों में प्रशिक्षण लेने हेतु आप पोर्टल में **on demand training** की मांग कर ऐसे प्रशिक्षणों में अपनी सक्रिय उपस्थिति देकर नई नई बातें सीखें और उपयोग करें
- और सबसे महत्वपूर्ण, विद्यालय में निरीक्षण दल को आकलन की चुनौती देने के पूर्व स्वयं अच्छे से तैयार हो जाएं। इसके लिए आप अपने आसपास के शिक्षकों, संकुल समन्वयकों के माध्यम से शाला के समस्त बच्चों का एक मोक ड्रिल आकलन कर लेवें

आप सभी को इस योजना में शामिल होने एवं चुनौती के लिए तैयार होने हेतु बधाइयां !!

Dakshata 1-5

Dakshata 6-8

एजेंडा आठ: कहानी उत्सव

राज्य में भाषाई सर्वे के आयोजन के बाद बच्चों को उनकी स्थानीय भाषा एवं परंपरा से जुडी सामग्री उन तक पहुंचाना एवं कक्षाओं में नियमित उपयोग में लाया जाना अत्यंत आवश्यक है। इस हेतु गाँव-गाँव में कहानी उत्सव का आयोजन कर सामग्री संकलित करना तत्काल प्रारंभ कर देना चाहिए।

कहानी उत्सव के आयोजन हेतु आवश्यक तैयारी-

शिक्षक, बच्चे एवं शाला प्रबन्धन समिति के सदस्य के साथ गाँव के कुछ प्रमुख व्यक्ति बड़े-बुजुर्गों की बैठक लेकर उनके स्थानीय परंपरा एवं संस्कृति से जुडी छोटी-छोटी कहानियाँ सुनाने के इच्छुक एवं कुशल कथाकारों से मिलकर उनसे बच्चों को कहानी सुनाए जाने का आग्रह कर तिथि, स्थान एवं समय प्राप्त करें।

इस बात का ध्यान रखें कि चयनित सुनाई जाने वाली कहानियाँ पाठ्य-पुस्तकों में शामिल न हों और शेर-चूहा, कछुआ-खरगोश जैसी प्रचलित कहानियाँ न हों। अधिक से अधिक संख्या में ऐसे कथाकारों का चयन कर आमंत्रित करें।

कथाकारों को सुनना-

निर्धारित तिथि एवं स्थल में ऐसे कथाकारों को आमंत्रित कर छोटे-छोटे समूह में बच्चों को कहानी सुनने, कुछ बड़े बच्चों को कहानी को सुनकर उसे लिखने एवं कुछ शिक्षकों को उन कहानियों को स्पष्ट एवं शुद्ध रूप से दस्तावेजीकरण करने हेतु जिम्मेदारी देवें। स्थानीय प्रतिभाओं को इन कहानियों के लिए उपयुक्त चित्र बनाकर देने हेतु प्रेरित करें एवं आवश्यक संसाधन उपलब्ध करवाएं। बच्चे कहानी को ध्यान से सुनकर, कुछ शंका होने पर दुहराने का अनुरोध कर वहीं सभी सुनी हुई कहानियों को लिखकर संकलित कर लेवें।

कहानियों का दस्तावेजीकरण-

कहानी उत्सव के आयोजन के उपरान्त उनमें से बेहतर एवं छोटे बच्चों के लिए उपयुक्त कहानियों का चयन कर उन्हें बच्चों के पढ़ने लायक आकर्षक बनाते हुए उनमें स्थानीय कलाकारों के सहयोग से उपयुक्त चित्र बनाकर कहानी का स्वरुप देते हुए शाला के पुस्तकालय में उपयोग हेतु उपलब्ध करवाएं।

कहानियों का संकलन एवं उपयोग-

संकुल एवं विकासखंड स्तर पर ऐसी चुनी हुई कहानियों को लेकर एक कार्यशाला का आयोजन किया जाए। इस कार्यशाला में इन कहानियों को बच्चों के पढ़ने लायक बनाते हुए उसे बाल साहित्य के रूप में विकसित किया जाए। इसका इलेक्ट्रोनिक स्वरुप भी तैयार कर इन कहानियों को अधिक से अधिक शालाओं में उपयोग के लिए उपलब्ध करवाया जाए।

एजेंडा नौ: सोशियल मीडिया में सक्रियता

राज्य में हमने विगत कुछ वर्षों से आप सभी के सहयोग से सोशियल मीडिया में अधिक से अधिक शिक्षकों को जोड़ा है। सोशियल मीडिया का उपयोग कर हमारे कुछ सक्रिय शिक्षक बहुत से नवाचार एवं अपने अच्छे कार्यों को एक दूसरे के साथ साझा करते हैं और उनका विस्तार करते हैं। इसका बहुत अधिक फायदा हमारे शिक्षक साथियों को मिला है। सोशियल मीडिया जहाँ एक ओर हमारी क्षमता विकसित करने एवं अपने आपको अद्यतन करने का कार्य करता है वहीं वह हमें एक सूत्र में पिरोते हुए एकता के प्रदर्शन करने का अवसर भी देता है। इससे हमारे ताकत एवं एका का पता भी चलता है। लेकिन विगत कुछ अवसरों पर जब सोशियल मीडिया का लाभ हमारे राज्य को लेने एवं अपने एका को दिखाने क अवसर आया, हमारे कुछ चुनिन्दा साथी ही सामने आकर एडी-चोटी एक करने का प्रयास किया। उनके इन प्रयासों को सादर प्रणाम ! लेकिन क्या इतनी बड़ी संख्या में उपलब्ध मानव संसाधन में से हम केवल कुछ ही साथियों की सक्रियता पर निर्भर करें ? क्या हमें अपने भीतर झांककर यह नहीं देखना चाहिए कि हमें अपने राज्य के परिप्रेक्ष्य में अपनी सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए ? विगत दिनों हमें परीक्षा पे चर्चा एवं हमारे राज्य के महिला शिक्षिकाओं के कार्यक्रम अंगना म शिक्षा को स्कोच अवार्ड दिलवाने हेतु वोटिंग में खूब एडी-चोटी लगानी पडी। ऐसा नही होना चाहिए। सबको ऐसे कार्यों में अपना योगदान बिना मांगे देना चाहिए। भविष्य में सभी साथी इस बात का ध्यान रखेंगे ऐसी उम्मीद क्या हम कर सकते हैं ? क्या हमारे सभी साथी ऐसे अवसरों पर स्वयं सामने आने हमेशा अपनी तत्परता दिखा सकते हैं ?

चर्चा पत्र के माध्यम से अपील है कि ऐसे अवसरों में हम सभी शिक्षक साथी एवं स्कूल शिक्षा विभाग में काम कर रहे सभी हितग्राही अपनी एका का प्रदर्शन कर राज्य के इमेज को बेहतर करने एवं हमारी सक्रियता को दिखाने का अवसर न चूकें और बिना बोले ही सभी अपने अपने हिस्से का सहयोग दें !

एजेंडा दस: इस माह किए जाने हेतु महत्वपूर्ण कार्य

1. सुघ्घर पढ़वईया में अधिक से अधिक स्कूल अपना पंजीयन कर चुनौती देने हेतु तैयारी करें
2. सभी गाँवों में कहानी उत्सव का आयोजन पूरी तैयारी के साथ करते हुए अपने अपने स्कूल के लिए स्थानीय कहानियों का संकलन करने माइक्रो-प्लानिंग करें
3. जिलों में प्रदत्त डिप-स्टिक सर्वे से संबंधित सभी कार्यों को अच्छे से संचालित कर शालाओं में परिवर्तन लाया जाना सुनिश्चित करें
4. शाला संकुल के सभी प्राचार्यों को एक दिवसीय प्रशिक्षण देते हुए शाला संकुल व्यवस्था को सुदृढ़ करने में कोई कसर न छोड़ें
5. FLN mentor प्रशिक्षण के आधार पर संकुल स्तर पर प्रशिक्षण का आयोजन एवं उनका हमारी कक्षाओं में सीखी बातों का नियमित उपयोग कर FLN के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु सहयोग